5. डॉ. मनोहर शर्मा"

1. बीज,

इसमें कवि ने बीज के माध्यम से मानव को ये समझाने का प्रयास किया है कि बीज अपना सर्वस्व त्याग कर अपने जीवन का बलिदान कर प्रकृति में सुख का रूप दिखलाता है बीज जब पककर धरती पर गिरता है तब धरती उसे अपनी गोद में संभाल कर रखती है अब वर्षा ऋतु में पानी की बुंदे धरती पर गिरती है और बीज को भिगो देती है तब वही बीज अपने अस्तित्व को खोकर नव पल्लव हेतु फूटकर पल्लवित हो जाता है कोमल-कोमल पत्तियाँ निकल जाती है ओस की बूँदे उस पर मानो हीरे-मोती सी दिखाई देती है और ये पौधों में धीरे धीरे बढने लगता है छोटी-छोटी कलियां उस पौधे पर खिलकर पुष्प रूप में दिखाई देती है और उसकी सुगन्ध चारों तरफ फैल जाती है फिर वही पौधा वृक्ष बनता है फलों से लद जाता है इस प्रकार वो इस संसार की सेवा करता है कवि इसके माध्यम से मानव को उपदेश देना चाहता है कि मानव भी बीज की भाँति संसार के सुख देकर समर्पित कर जीवन में खुशहाली लाके मर जाता है

2. सार कमाई "

कवि ने इस कविता के माध्यम से भाव अभिव्यक्त किये है कि व्यक्ति के जीवन में क्रियाकलापों के माध्यम से प्रेम, माया और मोह के माध्यम से बताना चाहता है कि यदि मन में सच्ची श्रद्धा और प्रेम हो तभी सेवा का सटीक रूप देखा जा सकता है कवि बताता है कि जब एक नगर के सेठ और गरीब ने गुरु की सेवा करने की इच्छा से गुरु के लिये अपनी - अपनी श्रद्धा के अनुसार भोग, प्रसाद ले जाते है जिसमें नगर सेठ भोग स्वरूप प्रसाद में गुरुदेव को अपनी माया का दिया धन पाने के निमित अच्छे - अच्छे थाल भोग सजाकर ले जाता है उसरी ओर गरीब ने गुरु के लिये श्रद्धा से बनाई रोटी ले जाता है। और दोनों ने गुरु के सम्मुख अपनी - अपनी थाल को परोसकर भोजन हेतु विनती करते है। तब गुरुदेव दोनो के मुंह देखकर बाहर और भीतर जान लेते है कि गरीब के मन में जहाँ श्रद्धा थी वही नगर सेठ के मन में अहंकार था। इस बात को जानकर गुरुदेव ने गरीब की रोटी का भोग लगाया और उसी समय गरीब ने गुरु के चरणों मे शीश झुका दिया। इस बात को देखकर नगर सेठ बड़ा दुखी हुआ कि गुरुदेव ने मेरे भोजन का प्रसाद स्वीकार नही करके गरीब की रोटी को स्वीकार किया, तब गुरुदेव ने नगर सेठ के मन में संशय दुर करते हुए बताया कि गरीब की रोटी में प्रेम व अमृत था।

Scanned by CamScanner

क्योंकि उसने मेहनत व श्रद्धा का भाव मिला हुआ था। जब कि तुम्हारे चावल में अंहकार व खून मिला हुआ। इसलिये कभी किसी को दान देना चाहो तो अपनी मेहनत की कमाई व मन मे सच्ची श्रद्धा से ही देना चाहिए तभी वो सार्थक है।

3. "तू जाग जाग ओ मिनख जाग"

डाक्टर मनोहर शर्मा ने उक्त कविता के माध्यम से व्यक्ति को जगाने का सार्थक प्रयास किया है कि यदि आज भी मनुष्य (मानव) नही जागता है तो उसका जीवन समाप्त हो जाता है इस निमित उसको सदैव विकास के पथ पर चलते रहना चाहिये। तभी उसका जीवन सार्थक है। व्यक्ति को अपने ह्रदय मे उन्ही भावो को समाहित करना चाहिए कि जिससे उसका जीवन सफल हो सके। साथ ही मनुष्य की अच्छी भावना होगी तो कर्म भी अच्छे होगे। जब कर्म अच्छे होंगे तो उसका जीवन सफल होगा। मनुष्य को अपनी जागृति के लिये कर्म को करते रहना चाहिये कर्म, तपस्या, मेहनत, समगहिता हो, तो निश्चय ही फल मिलता है। जब मेहनत से अर्जित फल पर व्यक्ति कभी घमण्ड नही करता है। यदि अनैतिक कर्म के धन से व्यक्ति को लोभ होगा। लोभ के प्रभाव से सदैव अहंकार या मोह, माया में पड़कर व्यक्ति सर्वनाश कर देता है। सर्वनाश से बचने के लिये मोह माया को त्यागकर संसार के लोगो को भाई समझना चाहिए।

Scanned by CamScanner

चन, रीतिरिवाज और संस्कारों के साथ ही सभ्यता
को स्वीकार कर सभी को एक जुट होकर कार्य
करने का प्रयास करना चाहिये तभी मानव का
कल्यान होगा। परिवर्तन युग में व्यक्ति आँखे
बन्द कर सोना और धर्म की चिन्ता में अपना
समय व्यतीत कर देता है। इसलिये सभी को
मेहनत कर भेदभाव को भूलकर एक साथ चलने
से ही परिवार समाज व देश का कल्याण होगा।
यही बात समझाने के लिये कवि बार - बार जाग्रत
करने का आग्रह करता है।

Scanned by CamScanner